बिहार के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य

डॉ० शिव नारायण मिश्र
संगीत शिक्षक
सूरज नारायण सिंह देव नारायण
गूड़मैता वाटसन, 2 विद्यालय,
मधुबनी

सारांश

प्राचीन काल मे दो तरह के नृत्य प्रचलित थे। मार्गी नृत्य एवं देशी नृत्य। नृत्य की उत्पति आदि देव भगवान शिव एवं आदि शक्ति माँ पार्वती द्वारा मानी जाती है। बिहार के संगीत नृत्य का उल्लेख वेदो, पुराणों और काव्यों आदि में मिलता है। ईसा पूर्व में बिहार के महान शासको में विम्बिसार, उदयन, चन्द्रगुप्त मोर्य, सम्राट अशोक, शुंग, कुशाण, कण्व, मौर्य राजवंश, गुप्त राजवंश के नरेशों ने राज किया। बिहार के पहले मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी के बाद तुगलक वंश एवं मुगलक के शासकों ने यहाँ अपना राज्य स्थापित किया। लगभग 1757 में पलासी की लड़ाई के बाद ब्रिटिश शासको ने यहाँ अधिपत्य जमाया। इसका प्रभाव बिहार के नृत्य एवं संगीत पर पड़ता रहा। 1936 में उड़ीसा एवं बंगाल से हटकर बिहार अलग राज्य बना। इसके बाद 15 नवम्बर 2000 ई को बिहार विभाजन हुआ एवं उसके दक्षिणी हिस्सा झारखण्ड को अलग राज्य बना दिया गया। जिस कारण बिहार में प्रचीन काल से प्रचलित लोक नृत्यों का भी बंटवारा होता रहा है। प्रचीन काल में जितने लोक नृत्य बिहार मे प्रचलित थे। वर्तमान मे उतने लोक नृत्यों का प्रचलन बिहार में अब नही है।

बिहार में लोक नृत्य के कई प्रकार प्रचलित है। बिहार के उत्तरी भाग को मिथिला कहा जाता है। चूँकि हम बिहार के विभिन्न लोकनृत्यों का वर्णन कर रहे हैं, अतएव प्राचीन काल से प्रचलित बिहार के समस्त प्रकार के लोकनृत्यो का वर्णन कर रहे है, लगातार इस्लामी आक्रमणों के कारण बिहार में राजनीतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत उथल–पुथल होता रहा है।

संकेत शब्द– बिहार, लोक नृत्य, लोक नाट्य के विभिन्न प्रकार

नृत्य एवं लोक नाट्य में अन्तर

बिहार मे प्राचीन काल से लोग नृत्य (नाच) को नाटक समझते थे। सामान्य जन के अलावा प्रसिद्ध विद्वानो मे भी नृत्य एवं नाटक को लेकर काफी तर्क–वितर्क बहुत दिनों से चलता आ रहा है। एक शैली है "लोरिक नाच" इस नाच शब्द को लेकर आचार्य रमानाथ झा तथा डा0 जयकांत मिश्र के बीच काफी तर्क वितर्क चला था। आचार्य रमानाथ झा के अनुसार नाच विशुद्ध रूप से नृत्य है जबकि डा0 जयकांत मिश्र इसे नाटक मानते रहे। कुछ विद्वानों का कथन है कि सामान्य जन में नाच को नाटक नाम से जाना जाता है। तथा कुछ लोग नाटक को नाच को समझते है।

यहां हम नाटक (अभिनय) एवं नृत्य (नाच) में अंतर स्पष्ट करना चाहेंगे। भाव मूलक अवस्थानुकृति को नृत्य कहते है। उसमे नाट्य और नृत्य दोनो का मेल होता है। जब ह्रदयगत् भावो की अभिव्यंजना ताल तथा लय से की जाती है तब उसे नृत्य कहा जाता है। इसमे भाव रस तथा अंग विक्षेप की अधिकता रहती है। भावों का स्पष्टीकरण अंग संचालन, शब्द तथा रस आदि के माध्यम से अभिनय द्वारा किया जाता है। अर्थात् नृत्य उसे कहते है, जिसमें नर्तक किसी एक पूरे भाव को कहानी के रूप मे ढ़ालकर अंग संचालन द्वारा व्यक्त किया करता है। दुसरी ओर जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के कार्यकलापों की नकल करता है। तब उसे अभिनय (नाटक) कहते है। यदि कोई भगवान कृष्ण के हाव भाव आदि का प्रदर्शन करे तब कहा जाएगा कि उसने कृष्ण का अभिनय किया है।

ऐसा मानना है कि प्राचीन काल में नृत्य नाटक का अंग था। परन्तु समय परिवर्तन के साथ यह धीरे–धीरे अलग हो गया है। किन्तु प्राचीन काल में नाटक के अन्तर्गत गीत एवं नृत्य का समावेश रहता था। इसी कारण बिहार मे लोक नाटक एवं लोक नृत्य को एक ही नाम से पुकारा जाता था। यहां हम जिन लोक नृत्यों का वर्णन कर रहे है। उनमें लोक नाट्य संबंधी नृत्यो का भी समावेश है। आज भी जब इनकी प्रस्तुति होती है तो उसमें नृत्य, गीत तथा वादन का समावेश रहता है।

बिहार के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य के प्रकार –

बिहार में आदि काल से जो नृत्य, प्रचलित हैं वे निम्न प्रकार के हैं–

1. पवड़िया नृत्य : यह नृत्य बिहार के मिथिला क्षेत्र में बहुत प्रचलित है। यह मुसलमान जाति के पवरिया समुदाय के परूषों द्वारा किया जाता है। मुसलमान के पवरिया जाति का मुख्य पेशा नृत्य गीत के माध्यम से जीवन यापन करना होता है किसी भी जाति के लोगों के बच्चे के जन्म के अवसर पर ये लोग सोहर, खिलौना, बधाई इत्यादि लोक गीत गाते हुए लोक नृत्य प्रस्तुत करते हैं घघरा, चोली पहनकर पुरूष नृत्य करते हैं। इसके साथ बाजा, ढ़ोल, झाझ, मंजीरा इत्यादि

वाघ यंत्र बजाये जाते हैं। उनका मानना है कि हमारे पूर्वज हजारों वर्षों से बच्चों के जन्म के अवसर पर गीत एवं नृत्य करते आ रहे हैं एवं खुशी से जो मिल जाता है उसे उपहार समझ कर स्वीकार कर लेते है। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में यह नृत्य आज भी देखने को मिलता है।

2 नटुआ नृत्य : नटुआ नृत्य बिहार का पारम्परिक लोक नृत्य है। यह बिहार के अलावा देश के अन्य भागों में भी प्रचलित है। उत्तर प्रदेश में इसे नौटंकी के नाम से जाना जाता है। बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में शादी के अवसर पर लड़का पक्ष के लोग बारात के साथ नटुआ को लेकर आते हैं एवं बारात धूमते समय नटुआ नृत्य होता है। नटुआ नृत्य में पुरूषों के द्वारा भी नृत्य किया जाता है। नटुआ नृत्य में पुरूष ही लड़की का वस्त्र पहनकर नृत्य करते है। कभी–कभी दो पुरूषों के द्वारा भी नृत्य किया जाता है। एक पुरूष महिला की भूमिका में तथा दूसरा मर्द की भूमिका में नृत्य और अभिनय करते है। इसका मुख्य उदेश्य दर्शकों का मनोरंजन करना होता है। प्राचीन समय में ढ़ोल, नगाड़ा, शहनाई, झाझ मंजीरा इत्यादि वाघ यंत्र इसके साथ बजाये जाते थे तथा गीत भी साथ मे गाया जाता था। परन्तु आधुनिक युग में अक्सर बैंड पार्टी एवं ढ़ोल, तासा पार्टी एवं रिकॉडिंग के साथ नटुआ नृत्य का प्रचलन बढ़ रहा है।

3 झिझिया नृत्य : झिझिया बिहार का प्रसिद्ध लोक नृत्य है। इसका आयोजन ग्रामीण क्षेत्रो में दुर्गा पुजा के अवसर पर महिलाओं द्वारा समूह में किया जाता है। महिलायें अपनी सखी–सहेली के साथ घेरा बनाकर सिर पर घड़ा रखकर नृत्य करती हैं। घड़ा में कई छेद रहते है। घड़ा के अन्दर दीपक जलता रहता है। सभी महिलायें राजा चित्रसेन तथा उनकी रानी की कथा प्रसंगों के आधार पर रचे गए गींतो को गाते हुए नृत्य करतीं है महिलाओं द्वारा एक साथ ताली वादन तथा पग चलन एवं थिरकन से जो समा बंधता है वह अत्यंत आकर्षक होता है। ऐसा माना जाता है कि दुर्गा पूजा में जादू–टोना एवं डायन का प्रकोप बढ़ जाता है। इसी को शांत करने के लिए महिलायें दुर्गामाता, ब्रह्म बाबा आदि मंदिरों मे जाकर नृत्य करती हैं, एवं रास्ते में भी नृत्य करती हैं।

इस नृत्य का प्रचलन ग्रमीण क्षेत्रों में दुर्गा पूजा के अवसर पर देखने को मिलता है। झिझिया नृत्य के साथ गीत भी गाया जाता है। गीत में देवी माता से विनती करने का जिक्र एवं डायन को गाली भी दिया जाता है। झिझिया गीत में लय बदलता रहता है।

4 झरनी नृत्य : झरनी नृत्य बिहार का लोक नृत्य है जो मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगो के द्वारा मुर्हरम के अवसर पर किया जाता है। यह नृत्य समूह में किया जाता है। महिलाओं का अलग समूह रहता है एवं पुरूषों का अलग समूह रहता है। यह नृत्य करते समय बांस के छोटे टुकड़ें लेकर नृत्य करते है। इस बांस के लकड़ी के मुख को 5 से 10 स्थानों तक काटा गया रहता है। जिसे आपस में टकराने पर मधुर आवाज निकलती है। कुछ लोग गीत गाते रहते हैं। तथा साथ में नृत्य भी करते है। इस नृत्य के साथ शोक गीत भी गाये जाते है। मुर्हरम के अवसर पर इसका आयोजन किया जाता है।

5 डोमकक्ष नृत्य : डोमकक्ष, पारिवारिक उत्सव से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण लोक नृत्य है। कुछ लोग इसे लोकनाट्य भी कहते हैं। यह नृत्य मुख्यतः शादी–विवाह के अवसर पर वर पक्ष के घर पर बाराती विदा होने वाले दिन की रात्री में महिलाओ द्वारा किया जाता है।

इसके साथ ढ़ोलक, झाल, मंजीरा इत्यादी बजाया जाता है कुछ महिलाएं गीत गाती है तथा कुछ महिलाओं द्वारा अभिनय करते हुए नृत्य भी किया जाता है। महिलाएं ही पुरूष की भूमिका निभाती हैं एवं नृत्य करती है।

6. सामा चकेवा : सामा चकेवा को कई लोग लोकगीत मानते हैं तथा कुछ लोकनृत्य मानते है, एवं कई लोग इसे लोक नाट्य की श्रेणी में रखते हैं। यह प्रत्येक वर्ष कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की सप्तमी से पूर्णमासी तक आयोजित किया जाता है। इसमें महिलाएं शाम में आंगन या चौराहा पर सामा के गीत गाती है एवं नृत्य भी करती हैं।

7. रामलीलाध्रास लीला नृत्य : बिहार में रामलीला एवं रासलीला नृत्य का आयोजन अक्सर देखा जाता है। रामलीला में भगवान राम का एवं रासलीला में कृष्ण भगवान का चित्रण गीत एवं नृत्य के माध्यम से किया जाता है। इसे लोग नृत्य नही कहकर कई लोग लीला के नाम से पुकरते हैं। बिहार के अलावा अन्य प्रदेशो में भी प्रचलित है। अधिकतर साधु–संत मंदिरों में इस प्रकार का उत्सव करते हैं एवं उसमें गीत प्रवचन–अभिनय के साथ–साथ नृत्य भी करते हैं।

8. भगतई नृत्य : बहार में हिन्दू धर्म के हरिजन, पासवान आदि समुदाय के लोगों द्वारा भगतई नृत्य का आयोजन सार्वजनिक स्थान जैसे ब्रह्म स्थान, मंदिर, किसी पवित्र पेड़ के निचे आदि स्थानों पर किया जाता है। इस नृत्य के आयोजन के माध्यम से देवी–देवता की पुजा की जाती है। भगतई बिहार का पारम्परिक नृत्य है इसमें कई लोग मिलकर गीत गाते है एवं एक या दो भगत होते है जो नृत्य करते हैं। अन्य कई लोग बहुत से वाघ जैसे ढ़ोलक, झांझ, मंजीरा मृदंग आदि बजाकर उत्साहवर्द्धन करते है।

9. कीर्त्तनियां नृत्य : कीरतनिया नृत्य के माध्यम से भगवान कृष्ण और भगवान रामजी की लीलाओं का वर्णन गीत, नृत्य एवं कीर्तन के माध्यम से किया जाता है। मिथिलांचल में कीरतनिया नृत्य का प्रचलन बहुत प्राचीन है। कीरतनिया को कई लोग नाटक के नाम से भी जानते है।

10. विद्यापति नृत्य : राज्य के पूर्णिया क्षेत्र के लोग इस प्रमुख लोक नृत्य का सामूहिक रूप से मिथिला के महान कवि विद्यापति के पदों को गाते हुए तथा पदों में वर्णित भावों को प्रस्तुत करते हुए नृत्य करते हैं।

मैथिली नाटककार महेन्द्र मलंगिया रंग प्रसंग के अपने निबंध में विद्यापति नृत्य के सन्दर्भ में लिखते हैं कि यह मिथिला के उत्तर पूर्वी भाग में होता है। इसके नामकरण को लेकर विवाद है।

11. कार्तिक नृत्य : मधुबनी जिला के प्रसिद्ध नाटकार महेन्द्र मलंगिया रंग प्रसंग के निबंध में लिखते हैं '' कार्तिक नाच की शुरूआत पाटन के राजा सिद्धिनरसिंह मल्ल ने की थी, जिनका राज्यकाल सन् 1619 से सन1661 ई0 तक का था। चूँकि इस नृत्य का आयोजन कार्तिक महीने में होता है। इसलिए इसे कार्तिक नाच भी कहा जाता है। इसे वे लोक नाट्य मानते हैं। इसमें नरसिंह इसमे मुखोटा लगाकर नृत्य किया जाता था। भगवान की लीला भी दिखाई जाती है अतः इसे नरसिंह नाच भी कहा जाता है। इसमे मुखौटा लगाकर नृत्य किया जाता है।

12 छऊ नृत्य : यह बिहार का प्रचीन लोक नृत्य था। बिहार के बँटवारा के कारण अब यह झारखंड के क्षेत्र में जा चुका है परन्तु इससे जुड़े आस–पास के क्षेत्रों में छऊ नृत्य का प्रचलन है। यह नृत्य यद्ध भूमि से संबंधित है। इस नृत्य में शारीरिक भाव भगिमाओं, ओजस्वी स्वरों तथा पगों की धीमी–तीव्र गति द्वारा संचालित होता है।

13. कठ घोडवा नृत्य : लकड़ी तथा बांस की खपच्चियों द्वारा निर्मित तथा रंग–बिरंगे वस्त्रों के द्वारा सुसज्जि घोड़ की पीठ के ऊपरी भाग में आकर्षक वेशभुषा एवं मेकअप से सजा नर्तक अपनी पीठ से बंधे घोड़े के साथ जव लोकवाधों के साथ नृत्य करता है तो उसका नृत्य बहुत अच्छा लगता है। विवाह अदि उत्सवों में यह नृत्य किया जाता है।

14. लौंडा नृत्य : यह नृत्य लड़कों द्वारा किया जाता है, अतः इसे आम भषा में लौंडा नृत्य कहा जाता है। रंग–बिरंगे वस्त्र तथा लिपा–पोता लड़का जब लड़कियों का रूप धारण करता है तो ग्रामीण दर्शक उसे सराहते नही थकते है। विवाह तथा अन्य मांगलिक समारोहों में इसकी प्रस्तुति एक आवश्यकता समझी जाती है। भोजपुर क्षेत्र में यह नृत्य अधिक प्रचलित है।

15 धोबिया नृत्य : यह नृत्य धोबी जाति का पारम्परिक लोक नृत्य है। यह भोजपुर क्षेत्र में ज्यादा प्रचलित है। इस का आयोजन विवाह एवं अन्य मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। नर्तक प्रचलित लोकवाधों की ताल पर श्रृंगार रस से पूर्ण गीतो के साथ इस नृत्य को प्रस्तुत करते है।

16 करिया झुमर नृत्य : यह बिहार का लोक नृत्य है जो महिलाओं द्वारा किया जाता है। इसमें एक महिला दूसरे महिला के हाथों में हाथ डालकर घुम–घुम कर नाचती एवं गाती है।

17 खोलडिन नृत्य : यह नृत्य महिलाओं द्वारा किया जाता है। कुछ व्यवसायिक महिंलाएं विवाह तथा अन्य मांगलिक कार्यक्रमों पर मनोरंजन की दृष्टि से यह नृत्य करती हैं। महिला अतिथि का मनोरंजन भी करती हैं तथा उनसे पुरस्कार भी प्राप्त करती है।

18 जोगिड़ा नृत्य : बिहार में होली के अवसर पर नृत्य का आयोजन ग्रामीणों द्वारा किया जाता है। होली के पर्व के दिन लोग एक दूसरे को रंग गुलाल लगाते हुए गाते हैं एवं नृत्य में मौज मस्ती की प्रमुखता रहती है। इस नृत्य में जो गीत गाया जाता है। उसमे जोगिड़ा शब्द के साथ सररर..... लगाया जाता है।

19 करमा नृत्य : यह नृत्य आदिवासियो द्वारा किया जाता है। इस नृत्य का आयोजन फसलों की कटाई बुआई के समय कर्म देवता के समक्ष किया जाता था।

यह एक सामूहिक नृत्य है जो पुरूष एवं महिला एक साथ दूसरे के कमर में हाथ डालकर श्रद्धापूर्वक कर्म देवता के गीतों को गाते हुए नृत्य करते है। इस नृत्य के साथ मृदंग, ढ़ोल, मादल, झांझ, मंजीरा, बांसुरी, तुरही आदि वाद्य बजाये जाते हैं।

20 अल्लारूदल नृत्य : अल्ला रूदल नाच मिथिलांचल का प्रसिद्ध लोक नृत्य नाटिका है। इसमें लोक गीत, नृत्य एवं अभिनय तीनों का समावेश रहता है। बिहार में दुर्गापूजा या अन्य अवसरों पर अल्लारूदल नाच का आयोजन रात्रि में किया जाता है। यह कथा पर आधारित है जिसमें जेसर, ढ़ोल, अल्लारूदल, झगडू, फतिमा आदि के जीवन की कहानी को नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें गीत नृत्य भी होता रहता है। इसीलिए इसे अल्लारूदल नृत्य नाटिका भी कहते हैं। इसे लोक गाथा एवं लोकनाट्य भी कहा जाता है।

21. जट जटिन नृत्य : जट–जटिन बिहार के उत्तरी क्षेत्र का लोकप्रिय लोक नृत्य है। कई लोग इसे लोकनाट्य भी मानते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि बिहार में एक बार भीषण अकाल एवं सूखा पड़ा था। उस समय एक महिला बंजर खेत में हल चलाते हुए इन्द्र देव को खुश करने हेतु बड़े ही अन्तः मन से गीत गाती रही। इससे इन्द्र भगवान खुश हो गये एवं उस समय वर्षा होने लगी। तब सभी लोग गीत एवं नृत्य करने लगे। तभी ये जट–जटिन एवं नृत्य का प्रारंभ माना जाता है। उसमें गीत, नृत्य एवं संवाद तीनों का समावेश रहता है।

कुछ अन्य नृत्यः–

22. सलहेस नाच

23. लोरिक नाच

24. बुढ़िया गोदिन नाच

25. हिरणी–बिरणी नाच

26. जया बिषहरा नाच

27. नचनी नाच

28. बडिलो नाच

29. विदेसीया नाच।

निष्कर्ष : बिहार में प्राचीन काल से लोक नृत्य का प्रचलन रहा है। बहुत प्राचीन लोक नृत्य धीरे–धीरे लुप्त होते जा रहे है। प्राचीन बिहार मे महात्मा बुद्ध के द्वारा समय से राजगीर और वैशाली में नर्तकियों एवं गायिकाओं की उपस्थिति के साक्ष्य मिलते है। पहले मंदिरों एवं विभिन्न उत्सवों मे लोक नृत्य की प्रस्तुति होती थी। राजा महराजाओं के राज दरबारों में नृत्य संगीत प्रस्तुत किये जाते थे तथा कलकारो को पुरस्कार एवं सम्मान दिया जाता था। अंग्रेजो के आक्रमण के समय इसका बहुत ह्रास भी हुआ था परन्तु स्वतंत्रता के बाद लोक नृत्य की स्थिति में पुनः सुधार भी हुआ। ग्रमीण क्षेत्रों में दुर्गा पुजा, छठ, होली आदि पर्व त्योहारों के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसके अन्तर्गत विभिन्न लोक नृत्यों की प्रस्तुति की जाती है। एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के कलाकारों द्वारा तथा बिहार सरकार के कला संस्कृति एवं युवा विभाग, सूचना जन सम्पर्क विभाग आदि द्वारा भी जिला, राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न महोत्सव में बिहार के लोक नृत्य की प्रस्तुती की जाती है। लोक नृत्य को देखने से उसकी विशेषताएं स्पष्ट रूप से देखने को मिलते है। बिहार के कई लोक नृत्य काव्य रचनाओं पर आधारित होते है उनका स्वरूप धार्मिक होता है। नृत्यों के माध्यम से देवी–देवताओं को प्रसन्न करने हेतु उनका गुणगान किया किया जाता है।

तथा भगवान से मन्नत मागा जाता है। वही दूसरी ओर कुछ नृत्य प्रकृति और सामजिक संस्कारों पर आधारित होते। कुछ नृत्य पारिवारिक उत्सवों से जुड़े होते है इसमें हास्य एवं उल्लास का वातावरण अधिक छाया रहता है। कुछ नृत्य ऐसे होते है जो लोकगाथा एवं नाट्य शैली पर आधारित होते है। इस प्रकार नृत्य में अभिनय गीत एवं नृत्य तीनों के माध्यम से विषय वस्तु को समझा जा सकता है। निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते है कि बिहार का लोक नृत्य आम लोगों का अपना नृत्य है जिसके माध्यम से लोग अपनी भावनाओं की अभिव्यत्ति एक साथ समूह में करते है जिसे देखकर लोग आनंदित एवं भाव विभोर हो जाते हे।

संदर्भ सूची

संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ – 203 आलेख पं0 नन्द किशोर मिश्र

संगीत निबंध संग्रह पृष्ठ – 197–199 संकलन हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव

प्रभाकर नृत्य प्रश्नोत्तरी पृष्ठ 38 लेखक – जगदीश नारायण पाठक

प्रतियोगिता साहित्य बिहार एक अध्ययन पृष्ठ 72–73 – लेखक – सम्पादक मंडल

रंग प्रसंग पृष्ठ 144– आलेख – महेन्द्र मलंगिया

विभिन्न संगीत परम्पराओं के वाध एवं वादक– पृष्ठ – 186 – 203 लेखक – डा0 शिव नारायण मिश्र